मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत

विषयः—जैविक खेती

राजेंद्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय बड़कोट(उत्तरकाशी)

सत्र 2021—22

प्राचार्य— डॉ० डी० एस० मेहरा

समन्वयक— डॉ० जगदीश चन्द्र रस्तोगी

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत विषय ''जैविक खेती'' की आख्या

उच्च शिक्षा निदेशालय उत्तराखण्ड हल्द्वानी (नैनीताल) के पत्र संख्याः डिग्री बजट/4534/2021–22 दिनांक 30 नवंबर 2021 के क्रम में महाविद्यालय से मुख्यमंत्री नवाचार योजना हेतु प्रस्ताव मांगा गया था, जिसके क्रम में महाविद्यालय ने दिनांक 03 दिसंबर 2021 को मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत महाविद्यालय में रोजगारपरक कार्यक्रम संचालन हेतु तीन विषयों क्रमशः जैविक खेती, मधुमक्खी पालन तथा होमस्टे योजना से जैविक खेती पर प्रस्ताव भेजे थे। जिसमें से उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा जैविक खेती विषय को स्वीकृत किया गया। उच्च शिक्षा निदेशालय उत्तराखण्ड के पत्र संख्याः डिग्री बजट/आवंटन/2021–22 दिनांक 14 जनवरी 2022 के अनुसार वित्त नियंत्रक उच्च शिक्षा उत्तराखंड हल्द्वानी के द्वारा महाविद्यालय को 42–अन्य विभागीय व्यय के अंतर्गत दो लाख की धनराशि आवंटित की गई। तत्पश्चात महाविद्यालय में मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत कमेटी गठित की गई और निर्णय लिया गया कि मुख्यमंत्री नवाचार योजना को सफल बनाने हेतु ''हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (हार्क) देहरादून'' से समझौता किया जाए। महाविद्यालय ने हिमालय एक्शन रिसर्च सेंटर (हार्क) से समझौता किया और छात्र–छात्राओं हेतु प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था के लिए अधिकृत किया। महाविद्यालय ने जैविक खेती कार्यक्रम में 30 छात्रों का चयन किया। मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत विषय जैविक खेती अंतर्गत विषय विशेषज्ञों द्वारा महाविद्यालय में प्रशिक्षण दिया। ''हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर'' के विषय विशेषज्ञों द्वारा दो दिन महाविद्यालय स्तर पर प्रशिक्षण दिया। हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर के कार्मिकों द्वारा विभिन्न फसलों को उत्पादित करने हेतु विविध विधियों एवं खाद तैयार करना आदि का प्रशिक्षण दिया। इसके अलावा उनके द्वारा 02 दिन ''हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर'' के कार्मिकों द्वारा अपने परिसर नौगांव में 30 छात्रों को दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। महाविद्यालय ने छात्र–छात्राओं को रामा सिराई क्षेत्र में लाल चावल की खेती की जानकारी हेतु भ्रमण कराया। वित्तीय वर्ष 2022–23 में महाविद्यालय में जैविक खेती को प्रोत्साहन देने व अपने कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु प्रस्ताव तैयार किया गया है छात्राओं को भविष्य के लिए तैयार किया जा सके और वह अपने क्षेत्र में जैविक खेती के गुर सीखकर उसे अपने क्षेत्र में भी कर सके।

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत जैविक खेती कार्यक्रम का उद्घाटन

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत जैविक खेती कार्यक्रम का उद्घाटन श्री आनंद सिंह राणा जिला पंचायत सदस्य कार्ड गांव के द्वारा किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र पंचायत सदस्य ग्राम प्रधान, प्राचार्य डॉ0 डी0 एस0 मेहरा, संयोजक जैविक खेती कार्यक्रम डॉ0 जगदीश चन्द्र रस्तोगी (प्राध्यापक वनस्पति विज्ञान) डॉ0 बी0 एल0 थपलियाल, डॉ0 विजय बहुगुणा, डॉ0 विनय शर्मा कार्यकारी सदस्य सम्मिलित रहे। मुख्यमंत्री नवाचार कार्यक्रम के अंतर्गत जैविक खेती के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री आनन्द राणा, जिला पंचायत डख्याटगांव ने छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा क्षेत्र जैविक खेती के लिए प्रसिद्ध है। यहां वर्षों से जैविक खेती की जाती रही है, हमें अपने फसलों को उगाने के लिए और अच्छे तरीके अपनाने होंगे और जैविक खेती को स्वरोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनना है। वहीं प्राचार्य डॉ० डी० एस० मेहरा ने अपने संबोधन में कहा कि यह क्षेत्र परंपरागत जैविक खेती के लिए जाना जाता है। हमें अपनी कृषि क्षेत्र को वैज्ञानिक विधि से कराकर हम अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं हमें फसलों को उगाने के सही तरीकों को जानना होगा और फसलों के विपणन की व्यवस्था करनी होगी हमारे फसलों में भरपूर मात्रा में पौष्टिक पदार्थ पाई जाती हैं वहीं कार्यक्रम के संयोजक डॉ जी सी जगदीश चंद्र ने प्रशिक्षण सत्र में जैविक खेती कैसे की जाती है? खाद तैयार करना, फसलों को सही समय बोना, खरपतवार से बचाव के उपाय कीटनाशकों का उपयोग धन्य फसलों का रखरखाव, विपणन व्यवस्था पर विस्तार पूर्वक छात्र–छात्राओं को जानकारी से अवगत कराया। डॉ० प्रह्लाद सिंह रावत ने कमल–सिराई एवं रामा–सिराई क्षेत्र में हो रही जैविक खेती पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने छात्र–छात्राओं को जैविक खेती को करने के तरीके अपनाने, उन्होंने अपने जीवन में किए गए कार्यों से अवगत कराया। रामा–सिराई क्षेत्र में लाल चावल की खेती के बारे में विस्तार पूर्वक प्रशिक्षणार्थी छात्र–छात्राओं को ज्ञान से परिचय कराया।

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत जैविक खेती की प्रस्तावित गतिविधियां

1–छात्र–छात्राओं को विषय संबंधी केंद्रों, संस्थानों एवं चयनित गांवों का भ्रमण कराना। बड़कोट से बाहर स्थित विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों देहरादून स्थित नवधान्य, खादी ग्रामोद्योग समितियों का भ्रमण, मृदा एवं संरक्षण संस्थान आदि पर छात्रों को भ्रमण हेतु ले जाया जाएगा।

2–हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर द्वारा छात्र–छात्राओं को हैण्डसआन ट्रेनिंग दी जाएगी तथा उनके द्वारा छात्रों को विविध क्षेत्रों का भ्रमण कराया जाएगा।

3–जैविक खेती से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे पोस्टर वाद–विवाद आदि का संचालन कर छात्रों को पुरस्कृत पुरस्कृत किया जाएगा।

4–जैविक खेती से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें विषय विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान एवं कार्यशालाओं आयोजित की जाएगी।

5– प्रस्तावित कार्यक्रमों से जुड़ी परंपरागत कृषि शैलियों, पद्धतियों एवं तरीकों के स्थानीय ज्ञान को एकत्रित कर उनका अभिलेखीकरण एवं प्रकाशन किया जाएगा।

6–महाविद्यालय की परिधि में स्थित गांवों का चयन कर उनमें होने वाली कृषि से संबंधित आंकड़ों को एकत्रित किया जाएगा तथा यमुना घाटी के लोगों को जैविक खेती के गुण से अवगत करा कर उन्हें जैविक खेती को बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण देना तथा उसका अभिलेखीकरण आ जाएगा। महाविद्यालय स्तर पर मृदा की जांच, वार्षिक वर्षा तथा तापमान के आंकड़े किए जाएंगे।

7–यमुना घाटी में जैविक खेती के द्वारा उपज होने वाली सब्जियों आंकड़े एकत्रित किए जाएंगे।

8 उक्त कार्यक्रम को रोज पार्क बनाने के लिए महाविद्यालय के क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न गांवों के ग्रामीणों को भी ज्ञान से अवगत करा दिया जाएगा किया जाएगा।

कार्यक्रम संचालन हेतु अनुमानित वित्तीय भार का विवरण

क्र0सं0	मद	अनुमानित व्यय
1.	छात्र–छात्राओं एवं मार्गदर्शक हेतु यात्रा व्यय एवं दैनिक भत्ता।	50000.00
2.	स्टेशनरी, टाइपिंग खर्चा, पुरस्कार, अभिलेखीकरण का प्रकाशन, फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी आदि पर व्यय।	50000.00
3.	विषय विशेषज्ञों का यात्रा भत्ता तथा दैनिक भत्ते आदि पर व्यय।	50000.00
4.	हैंड्स ऑन ट्रेंनिंग प्रशिक्षकों, विषय विशेषज्ञ का यात्रा भत्ता, मानदेय, प्रशिक्षण सामग्री पर व्यय, विषय के प्रशिक्षण संस्थानों में पर शिक्षकों का भ्रमण एवं तक संबंधी व्यय।	100000.00
कुल योग		**250000.00**

लाभान्वित होने वाले छात्रों का विवरण

1– महाविद्यालय में बी० एस–सी के छात्र छात्राओं को वरीयता दी जाएगी।

2– संचालित कार्यक्रम से लगभग 15 से 20 छात्र–छात्राएं लाभान्वित होंगी।

3– प्रतिभागियों का चयन पहले आओ पहले पाओ के आधार पर किया जाएगा।

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत विषय जैविक खेती हेतु चयनित छात्र–छात्राओं की सूची

क्र0 सं0	छात्र–छात्राओं के नाम	पिता का पाम	कक्षा
1	आशीष कुमार	श्री दर्शन लाल	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
2	अखिलेश	सरजीत लाल	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
3	शिवम सरियाल	सियाराम	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
4	सुमित	कमला राम	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
5	मधुसूदन डिमरी	सुरेंद्र दत्त डिमरी	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
6	गिरीश नौटियाल	शांति प्रसाद नौटियाल	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
7	सचिन शाह	सुरेश शाह	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
8	संदेश	उपेंद्र सिंह रावत	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
9	ऋषभ	सुमन	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
10	सचिन	कुमनी लाल	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
11	अनुपमा डिमरी	वासुदेव प्रसाद डिमरी	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
12	डिंपल	भूपेंद्र सिंह	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
13	मंजीता	अमरचंद	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
14	नीलम	चमनलाल	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष

15	नीलम	शीशपाल सिंह	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
16	मोनिका	फरसराम नौटियाल	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
17	निकिता	सोहन लाल	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
18	नम्रता	सुभाष चंद्र	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
19	सुष्मिता	भजन सिंह	बी० एस–सी० तृतीय वर्ष
20	हर्षमणी मंत्रियाण	चंद्रमणी	बी० एस–सी० द्वितीय
21	सोनालिका	खजान दास	बी० एस–सी० द्वितीय
22	राहुल भारती	दिनेश	वर्ष बी० ए० तृतीय वर्ष
23	मधु	राकेश सिंह रावत	वर्ष बी० ए० तृतीय वर्ष
24	कृष्णा	मदन खत्री	वर्ष बी० ए० तृतीय वर्ष
25	करिश्मा	इंद्र राम चौहान	वर्ष बी० ए० तृतीय वर्ष
26	लविशा	शूरवीर सिंह राणा	वर्ष बी० ए० तृतीय वर्ष
27	गायत्री	सूरत सिंह चौहान	वर्ष बी० ए० तृतीय वर्ष
28	आयुषी	कृष्णदेव उनियाल	वर्ष बी० ए० तृतीय वर्ष
29	रुचि	अतुल	वर्ष बी० ए० तृतीय वर्ष
30	शिवानी	सुरेश लाल	बी० ए० प्रथम वर्ष

मुख्यमंत्री नवाचार विषय जैविक खेती पर प्रथम बैठक का कार्यवृत्त

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत महाविद्यालय में रोजगारपरक कार्यक्रम संचालन विषयक प्रस्ताव के क्रियान्वयन एवं स्वीकृत अनुदान के नियमानुसार एवं समयबद्ध उपयोग हेतु गठित समिति की एक आवश्यक बैठक 4 मार्च 2022 को प्राचार्य कक्ष में आयोजित हुई, जिसमें विषयगत प्रकरण पर विचार विमर्श के उपरान्त सर्वसमिति से निम्नलिखित निर्णय लिए गए।

1– योजना से लाभान्वित होने वाले 30 छात्र– छात्राओं को स्नातक अंतिम वर्ष से चयनित किया जाए। स्थान रिक्त होने की स्थिति में स्नातक द्वितीय वर्ष के छात्रों को कार्यक्रम हेतु चयनित किया जाए।

2– जैविक खेती के अंतर्गत स्थानीय स्तर पर उगाई जा रही जैविक फसलों, दालें, मसाले, सब्जियां इत्यादि की परंपरागत विधियों उत्पादन के आंकड़ों की जानकारी प्राप्त कर उनका अभिलेखीकरण किए जाने हेतु कार्यवाही की जाए।

3–प्रशिक्षण कार्य हेतु क्षेत्र में विगत कई वर्षों से जैविक खेती के क्षेत्र में कार्य कर रहे एनजिओ

हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (हार्क) से समझौता पत्र हस्ताक्षरित किया जाए, जिस हेतु उन्हें तत्काल एक औपचारिक पत्र प्रेषित किया जाएगा।

4–प्रतिभागी छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा एवं जानकारी प्राप्त करने हेतु दिनांक 10 मार्च 2022 तक एक कार्यशाला आयोजित की जाएगी जिसमें यथासंभव किसी विषय विशेषज्ञ को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाएगा।

5– प्रतिभागी छात्र–छात्राओं की संबंधित विषय पर वाद–विवाद, पोस्टर एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए।

6–विशेष विशेषज्ञों को आमंत्रित कर व्याख्यान एवं कार्यशाला का आयोजन किया जाय।

7– छात्रों को व्यवहारिक प्रशिक्षण देने हेतु सहयोगी संस्थाओं, विभागों से समन्वय स्थापित कर हैंड्सआन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाए।

8– जैविक खेती से जुड़ी परंपरागत कृषि कार्य विधियों, तरीकों के स्थानीय ज्ञान को एकत्रित किया जाएगा तथा उनका अभिलेखीकरण यथा आवश्यक प्रकाशन किया जाए।

9– छात्र–छात्राओं को कृषि क्षेत्र में स्वरोजगार अपनाने हेतु संबंधित वित्तीय संस्थाओं के अधिकारियों कृषि, भूमि संरक्षण, उद्यान, कृषि उत्पाद विपणन परिषद इत्यादि विभागों के विषय विशेषज्ञों एवं अधिकारियों द्वारा आमंत्रित या व्याख्यानों का आयोजन किया जाए।

10– प्रतिभागी छात्र–छात्राओं का प्रयोजन के अंत में समुचित मूल्यांकन विधियों से मूल्यांकन कर उन्हें प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार इत्यादि प्रदान की जाए।

11–स्वीकृत कुल अनुदान 200000.00 रूपए का विभिन्न निर्धारित मदों में निम्नवत व्यय सीमा का निर्धारण किया जाता है।

क्र0सं0	मद	अनुमानित व्यय
1.	छात्र–छात्राओं एवं मार्गदर्शक हेतु यात्रा व्यय एवं दैनिक भत्ता।	50000.00
2.	स्टेशनरी, टाइपिंग खर्चा, पुरस्कार, अभिलेखीकरण का प्रकाशन, फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी आदि पर व्यय।	50000.00
3.	विषय विशेषज्ञों का यात्रा भत्ता तथा दैनिक भत्ते आदि पर व्यय।	50000.00
4.	हैंड्स ऑन ट्रेंनिंग प्रशिक्षकों, विषय विशेषज्ञ का यात्रा भत्ता, मानदेय, प्रशिक्षण सामग्री पर व्यय, विषय के प्रशिक्षण संस्थानों में पर शिक्षकों का भ्रमण एवं तक संबंधी व्यय।	50000.00
कुल योग		**200000.00**

उपरोक्त व्यय शीर्षकों में व्ययाधिक्य/न्यूनतम होने की दशा में महाविद्यालय नवाचार समिति आवश्यकता अनुसार परिवर्तित कर सकेगी।

उक्त सभी निर्णयों का समयबद्ध रूप से क्रियान्वयन एवं बजट धनराशि के नियमानुसार उपयोग हेतु महाविद्यालय नवाचार समिति कार्यवाही करने एवं निर्णय लेने तथा क्रियान्वयन हेतु पूर्णतया उत्तरदायी रहेगी। कार्यक्रम के समय–समय पर अनुश्रवण किए जाने हेतु उक्त समिति की प्रत्येक सप्ताह न्यूनतम एक बैठक संयोजक द्वारा आहूत की जाए, ताकि प्रगति आख्या की समीक्षा करते हुए आवश्यकतानुसार परिवर्तन एवं परिवर्धन किया जा सके तथा समयबद्ध रूप से परियोजना पूर्ण की जा सके।

बैठक में निम्न प्राध्यापक कर्मचारी उपस्थित रहे।

1– डॉ० डी०एस० मेहरा – प्राचार्य
2– डॉ० जगदीश चन्द्र रस्तोगी – संयोजक
3– डॉ० विजय बहुगुणा – सदस्य
4– डॉ० बी० एल० थपलियाल – सदस्य
5– श्री विनय शर्मा– – सदस्य
6– श्री दया प्रसाद गैरोला– सदस्य
7– श्री राकेश रमोला– सदस्य

नवाचार योजना बैठक संख्या –2 का कार्यवृत्त

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत महाविद्यालय में रोजगारपरक कार्यक्रम संचालन विषयक प्रस्ताव के क्रियान्वयन एवं स्वीकृत अनुदान के नियमानुसार एवं समयबद्ध उपयोग हेतु गठित समिति की एक आवश्यक बैठक आज दिनांक 21 मार्च 2022 को प्राचार्य कक्ष में आयोजित की जिसमें विषयगत प्रकरण पर विचार विमर्श के उपरांत सर्वसम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिए गए।

1– पूर्व में आहूत की गई बैठक में बिंदु संख्या –03 के तहत हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (हार्क) से एमओयू समझौता प्राप्त कर लिया गया है। जिसके तहत हार्क द्वारा छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षण, क्षेत्र भ्रमण व्याख्यान प्रशिक्षण, ऑर्गेनाइजर का मानदेय दस्तावेजीकरण, यात्रा भत्ता आदि हेतु रू0 100000.00 का समझौता हुआ है।

2– दिनांक 23 मार्च 2022 को जैविक खेती नवाचार कार्यक्रम का उद्घाटन किया जाएगा। उद्घाटन के पश्चात विषय विशेषज्ञ डॉ० प्रह्लाद सिंह रावत (मानद फेलो दून लाइब्रेरी एंड रिसर्च सेंटर देहरादून) का व्याख्यान/प्रशिक्षण दिया जाएगा।

3– सर्व समिति निर्णय लिया गया कि अभिलेखीकरण हेतु एक इंकटेक प्रिंटर (भ्च– 316) क्रय किया जाएगा, जिसकी लागत लगभग रू0 14000 होगी।

4– पुरोला रामासिराई/ रामकमल सिराई क्षेत्र में में एक दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम डॉ० जगदीश चन्द्र रस्तोगी के नेतृत्व में आयोजित किया जाएगा, जिसमें छात्र–छात्राओं हेतु प्रति छात्र दैनिक भत्ता रू0 200.00 एवं मार्गदर्शक प्राध्यापक शिक्षक हेतु रू0 450.00 देय होगा और छात्र–छात्राओं एवं प्राध्यापकों से प्राप्त रसीद प्राप्त कर ली जाएगी।

5– भ्रमण हेतु गाड़ी का भाड़ा अलग से दिए होगा जिसका बिल प्राप्त कर लिया जाएगा।

6–महाविद्यालय परिसर में तारवाड़ करके कृषि हेतु एक खेत (बगीचा) तैयार किया जाएगा।

7– विषय विशेषज्ञ के व्याख्यान/प्रशिक्षण हेतु दैनिक भत्ता 2000 रूपए एवं यात्रा भत्ते के रूप में टैक्सी भाड़ा 1000 एक हजार प्रदान किया जाएगा।

8– उपरोक्त कार्य संपादित होने के पश्चात पुनः समिति की बैठक आयोजित की जाएगी तथा बिल वाउचर का मूल्यांकन किया जाएगा। बैठक में मुख्यमंत्री नवाचार योजना समिति के निम्नलिखित प्राध्यापक कर्मचारी उपस्थित रहे।

1– डॉ० डी०एस० मेहरा – प्राचार्य
2– डॉ० जगदीश चन्द्र रस्तोगी – संयोजक
3– डॉ० विजय बहुगुणा – सदस्य
4– डॉ० बी० एल० थपलियाल – सदस्य
5– श्री विनय शर्मा– – सदस्य
6– श्री दया प्रसाद गैरोला– सदस्य
7– श्री राकेश रमोला– सदस्य

रामा–सिराई क्षेत्र में भ्रमण मुख्यमंत्री नवाचार योजना के रामा–सिराई क्षेत्र का भ्रमण

छात्र–छात्राओं को रामा–सिराई क्षेत्र में भ्रमण के लिए टीम संयोजक डॉ० जगदीश चन्द्र, प्राचार्य डॉ० डी०एस० मेहरा के नेतृत्व में गांव रामा, सिराई, गुन्दियाटगांव आदि का सर्वेक्षण एवं भ्रमण किया। इस दौरान छात्र–छात्राओं ने विभिन्न गांवों के लोगों से पूछ कर से वहां होने वाली विभिन्न फसलों के उत्पादन से संबंधित आंकड़ों को एकत्रित किया। सर्वेक्षण में छात्र छात्राओं ने मटर की खेती, गेहूं की खेती, चावल की खेती सेब के बगीचों का भी निरीक्षण एवं सर्वेक्षण के आंकड़े एकत्रित किए।

हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर (हार्क)

विषय– मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अन्तर्गत जैबिक खेती पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।

संसाधन व्यक्ति – राकेश कुमार, बबीता जोशी, मोहित विष्ट।

स्थान – राजकीय महाविघालय बडकोट।

दिनांक 23.03.2022 को राजकीय महाविघालय बडकोट में मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अन्तर्गत चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम दिवस का कार्यक्रम निम्नलिखित प्रकार से रहा है।

हार्क के संसाधन व्यक्तियों का समयवार प्रस्तुतिकरण –

1. जैविक खेती द्वारा मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन – हार्क के संसाधन व्यक्ति राकेश कुमार के द्वारा विघार्थियों को जैविक खेती के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया जिसमें मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन मुख्य था तथा इसके साथ साथ हम फसलों में बिमारियों का प्रबन्धन किस प्रकार किया जाये इसकी भी विस्तत जानकारी दी गयी तथा साथ ही कुछ खादों तथा जैविक कीटनाशकों व जैविक फफूंदनाशकों को बनाने की भी जानकारी दी गयी जो निम्न प्रकार से है।

जैविक खेती क्या है :

भारत में हरित क्रांति के आगमन के पूर्व लगभग सभी कृषक एक तरह के जैविक कृषि प्रणाली में ही अपने विभिन्न कृषि कार्य कलापों को सम्पन करते थे। उत्तरॉचल में अभी भी असिचिंत भूमि में जैविक पद्धति बिना रसायन के प्रयोग से कृषि कार्य किया जाता है। परन्तु आधुनिक काल में जैविक कृषि की परिभाषा के अनुसार केवल रसायनों के प्रयोग को निषेद करना मात्र

जैविक कृषि नहीं कहलाती है। रसायनों के प्रयोग को पूर्णतः प्रतिबंधित कर अन्य कई कार्य जो कृषि हो हर प्रकार से संतुलित रखते हैं। जैसे फसल चक्र, सहभागी फसल, पशुओं का रखरखाव, पशुपालन, कृषि उद्यान, भंडारण, विपणन में पारदर्षिता गतिविधियां आदि समस्त कार्यो के संयुक्त सम्मिलन ये जैविक कृषि मानी गई है। जैविक कृषि तीन मुख्य उद्देष्यों पर्यावरणीय, स्वास्थ्य, आर्थिक समृद्धि और सामाजिक तथा आर्थिक क्षमता का संयोजन करती है।

जैविक खेती क्यों :

1960 के दषक मे हमारे देष में खाद्यान का बहुत संकट आया। उन समस्याओं के सामधान के लिए अपनाई गई हरित क्रांति के दौर में संकर बीज, रसायनिक खाद और सिंचाई की सुविधाओं से अन्न उत्पादन बहुत तेजी से बढा और भारत अन्न उत्पादन के मामले में आत्म निर्भर हो गया पेट भरने के लिए पारम्परिक खेती में रसायनिक खेती में तब्दील हो गयी।

जिसका दुष्परिणाम यह रहा कि उत्पादन एक समय तक बढता गया। फिर उत्पादन में कमी के साथ–साथ उत्पादन लागत बढने लगी व अत्यधिक रसायनों के प्रयोग से मित्र जीवों का नुकषान होने के कारण फसलों में बीमारी एंव कीटों का प्रकोप के साथ–साथ कई प्रकार की बिमारियों ने भी जन्म लिया।

ट्राईकोडर्मा :

टाईकोड्रर्मा तैयार करने की घरेलू विधि :

एक गर्मी को सहन करने वाली पालीथीन लेते हैं उसमें एक किलो चावल रखकर उसको ऊपर से बांध देते हैं। उस चावल को प्रेसर कुकर में डालकर पकाते हैं। ठीक से पकने के बाद चावल को बाहर निकालकर ठंडा कर इंजेक्षन की सहायता से ट्राईकोडर्मा के स्पोर उसके अंदर डाल देते हैं तथा ऊपर से मोम लगा देते हैं। तथा उसको एक सप्ताह के लिए रख देते है तथा एक सप्ताह बाद उसको पीस कर पाउडर बना देते हैं। 2 से 2.5 किलो पाउडर एक एकड खेत के लिए पर्याप्त होता है। बाजार से उपलब्ध होने वाले ट्राईकोडर्मा में यदि माइकोपस की संख्या 80 प्रतिषत से कम होती है तो उनका असर कम हो जाता है।

वायोडायनमिक ट्री पेस्ट :

सामग्री :

- रेत 5 किलो
- मिट्टी 5 किलो

- गाय का गोबर 5 किलो
- 25 ग्राम वी. डी. 500
- 15 लीटर पानी

विधि :

रेत, मिट्टी एंव गाय के गोबर को अच्छी तरह से मिलाकर उसके बाद 25 ग्राम वी. डी. 500 को 15 लीटर पानी में अच्छी तरह से घोलते हैं। इसको लगभग 1 घंटे तक हिलाते रहते हैं। उसके बाद तैयार घोल को रेत, मिट्टी एंव गाय के गोबर मिश्रण पर डालकर अच्छी तरह से हिलाते हैं। तथा यदि आवष्यकता होती है तो पानी और डालते हैं। उसके बाद पेस्ट को एक बाल्टी मे लेकर पेडो की छाल पर लिपाई करते हैं।

सी. पी. पी. खाद :

सामग्री :

- 60 किलो गाय का गोबर।
- 250 ग्राम अंडे के छिलके।
- 250 ग्राम गुड।
- वायोडानमिक प्रीपेसन एक पैकेट।

विधि :

सर्व प्रथम 2.5 ग 2.5 ग 2 फीट एक गडढा अपनी आवष्यकता के अनुसार ईंट व पत्थरों का बनाया जाता है। उसके बाद इन तीनों सामग्री का मिश्रण बनाया जाता है। इस मिश्रण को इस गडढे में 6 से 9 इंच तक भरना होगा। इस प्रकार तैयार मिश्रण के बाद वायोडायनमिक प्रपेषन को चारो कोनो पर डालना होगा।

तैयार होने का समय :

30 से 45 दिन में इस गडढे से 40 किलो गोबर की खाद तैयार हो जायेगी। इस प्रकार तैयार खाद को एक मटके में एकत्रीत करके छाया वाले स्थान पर रखना होगा।

उपयोग :

इसका उपयोग खेत तैयार करते समय व पौधों में फूल आते समय खाद के रूप में प्रयोग कर सकते है। इस खाद का उपयोग करते समय यह ध्यान रहे खेत में नमी अवष्य होनी चाहिए।

जैविक पेस्टीसाइड बनाने की विधि :

आवश्यक सामग्री :

- 10 किलो नीम का बीज।
- 25 लीटर पानी।

- 200 ग्राम सिकाकाई।
- प्लास्टिक वर्तन।

विधि :

10 किलो नीम के बीज को कुटकर 25 लीटर पानी में सुबह 6 बजे भीगो दें। उसमें 200 ग्राम सिकाकाई पाउडर मिला दें। सांय को 3 बजे इस घोल को छान लें। उसके बाद 200 से 250 लीटर पानी मिलाकर एक एकड खेत में इसका छिडकाव करें।

जहॉ पर नीम उपलब्ध नही है वहां पर 2.5 किलो लहसुन कुटकर 10 लीटर पानी में सांय को भीगो दें तथा इस घोल में 200 ग्राम सिकाकाई मिला दें अगले दिन 3 बजे सांय को घोल को छान कर 200 से 250 लीटर पानी में मिलाकर खेत में स्प्रे कर दें।

लाभ : उपरोक्त घोलों का स्प्रे करने से खेत में कीडे एंव बीमारियों का प्रकोप नही होता है।

टमाटर में मोजेक रोग नियंत्रण हेतु जैविक दवाई विधि :

पंचगब्य :

गाय से प्राप्त पांच उत्पादों जैसे गोबर, दूध, दही, घी, मूत्र का मिश्रण बनाकर पंचगव्य औषधीय तैयार किया जाता है।

आवश्यक सामग्री :

- गाय का ताजा कच्चा गोबर 7 किलो।
- गाय का सड़ा गोबर 1 किलो।
- गोमूत्र 3 लीटर।
- गाय का दूध 3 लीटर।
- गाय का दही 3 लीटर।
- गाय का घी 3 किलो।
- गुड़ 3 किलो।
- सड़े फल 3 किलो।

विधि :

गाय की घी एंव गोबर को मिक्स कर दो दिन के लिए रख दें। उसके बाद उसमें गोमूत्र एंव 10 लीटर पानी मिला दें। उसे रोज सुबह साम 15 दिन तक हिलायें। उसके बाद उसमें गुड, दूध, दही तथा सडे हुए फल मिला दें। उसके बाद उसे दो सप्ताह के लिए सडने के लिए रख दें। दो सप्ताह बाद पंचगव्य घोल स्प्रे के लिए तैयार हो जाता है। इसको छानकर अलग कर लें तथा 3 प्रतिषत घोल के हिसाब से खेत में स्प्रे करें।

पंचगव्य को सिंचाई के पानी के साथ भी मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है। 50 लीटर प्रति हैक्टयर के हिसाब से सिंचाई हेतु प्रयोग करें ।

बीज एंव जड उपचार :

3 प्रतिषत पंचगव्य का घोल बनाकर बीज/ जडो को 20 से 30 मिनट तक भीगो कर रखे।

बीज भण्डारण में उपयोग :

3 प्रतिषत पंचगव्य के घोल में बीज को भीगोकर सूखा दें फिर भंण्डारण करने पर बीजों में कीडो का प्रकोप नही होता है।

पंचगव्य के खेत में स्प्रे की तीन अवस्थायें मुख्य है –

- फूल निकलने से पहले एंव फल बनते समय।
- प्रत्येक फसल में 15 दिन के अंतर पर।
- फल एंव फली बनते समय।

अमृतपानी :

सामग्री :

1. गाय का गोबर 10 किलो
2. शहद 500 ग्राम
3. गाय का घी 250 ग्राम

विधि :

10 किलो गाय के गोबर में 250 ग्राम गाय का घी मिलाकर 2 घंटे तक रख देते है। उसके बाद उस मिश्रण में 500 ग्राम शहद को अच्छी तरीके से मिश्रण कर 4 घंटे के लिए रख देते हैं। इस तरह से जो घोल तैयार होता है। उसे अमृतपानी कहते हैं। इसका उपयोग निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

भूमि संस्कार :

तैयार एक लीटर मिश्रण को 100 लीटर पानी मे मिलाकर वुवाई / रोपाई के बाद खेत में स्प्रे करते हैं और 500 अमृत पानी एक एकड खेत के लिए पर्याप्त होता है।

बीज संस्कार :

अमृत पानी के घोल को बीज के ऊपर छिडकर छाया वाले स्थान पर सुखाने के लिए रख देते हैं। तथा सुखने के बाद वुवाई का कार्य करते हैं।

वनस्पति संस्कारा :

वनस्पति संस्कार पौधो के अच्छे स्वास्थ्य एंव अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए करते हैं। इसमें 10 लीटर गोमूत्र लेकर 2 लीटर नीम ऑयल तथा 200 लीटर पानी मिलाकर एक हैक्टयर के लिए स्प्रे करते हैं।

मटका खाद :

आवश्यक सामग्री :

- 15 किलो गोबर
- 15 लीटर गोमूत्र
- 15 लीटर पानी
- 250 ग्राम गुड

विधि :

सर्व प्रथम एक मटका लेते है उसके बाद उस मटके को मिट्टी के अंदर गडढा बनाकर दाब देते है। परन्तु ध्यान रहे कि मटके का उपरी सिर नही दबना चाहिए। उसके बाद इन सभी सामग्रियों का मिश्रण करके इस मटके में डाल देते है। और ऊपर से किसी पत्थरी की सहायता से ढक देते। जिससे कि इस मटके में कोई अन्य सामग्री नही गिरने पाये। इस मटके को दुसरे व तीसरे दिन मिश्रण को डण्डे की सहायता से हिलाना चाहिए ताकि मिश्रण का सारा भाग सड सके।

तैयार होने का समय :

यह खाद 7–10 दिन के अंतराल में तैयार हो जाती है।

उपयोग विधि :

1:10 लीटर पानी मिलाकर खेत में 15 दिन के अंतराल में खेत में स्प्रे करें।

मटका खाद : (टमाटर में मोजेक रोग नियंत्रण हेतु)

आवश्यक सामग्री :

1. गाय का मटठा 10 लीटर।
2. नीम की पत्ती 2 से 2.5 किलो।
3. 500 ग्राम लहसुन
4. मटका

विधि : गाय का मटठा 10 लीटर 2.5 किलो नीम की पत्ती को एक घडे में रख लें तथा घडे के मुँह को ऊपर से कपडे से बांध दें। तथा घडे को जमीन में गाड दें 20 से 25 दिन बाद घडे को जमीन से निकालकर घोल को छान दें। तथा छने हुए 1 लीटर घोल में 10 लीटर पानी मिलाकर एक–एक सप्ताह के अंतर पर खेत में स्प्रे करें। इसका स्प्रे करने से टमाटर के खेत में मोजक रोग का प्रकोप नही होता है। सब्जी फसलों में उत्पाद की गुणवत्ता बढाने के लिए प्रत्येक पौधे की जड में 5 एम. एल. अरडी का तेल डाले इससे जडों का विकास अच्छा होता है। फलों का साइज एंव चमक बढती है।

तरल खाद / जैव कीटनाशक तकनीक :

उत्तरॉचल के पहाडी क्षेत्रों में कई वानस्पतियां उपलब्ध हैं जिनमें कीटरोधी गुण पाये जाते है। इन वानस्पतियों से तरल खादें एंव जैव कीटनाषक बनाए जा सकते हैं। इस तकनीक को किसान अपने घर पर आसानी से बनाकर फसलों के उत्पादन में वृद्वि एंव कीट नियंत्रण के लिए उपयोग कर सकते है।

तरल खाद क्या है :

वह वानस्पतिक जिसमें कीटरोधी गुण पाये जाते है उन्हें पानी व गोमूत्र के साथ नियमित समय तक सडाकर पौधों में तरल खाद के रूप में छिडकाव किया जाता है।

आवश्यक सामग्री :

- स्थानीय वानस्पति (कंडाली, डैकण, अखरोट, टिमरू, धतुरा, अंयार इत्यादि) 10 किलो
- प्लास्टिक ड्रम 100 लीटर
- गोमूत्र 10 लीटर

- पानी 10 लीटर

बनाने की विधि :

सभी सामग्रियों का मिश्रण करके ड्रम में डाले तथा हर दिन घोल को अच्छी तरह हिलायें ताकि वह आसानी से सड जाय।

तैयार होने लगा समय : इस मिश्रण को तैयार होने में 30 दिन का समय लगता है। उसके बाद इस मिश्रण को छान करके ठंडे स्थान पर भंडारण करे।

प्रयोग विधि :

1 लीटर तरल खाद को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। 10 लीटर तरल खाद एक एकड खेत के लिए पर्याप्त होती है।

वर्मीवाष तकनीक :

वर्मीवाष एक तरल खाद है जो छिडकाव कर प्रयोग की जाती है। इसमें नत्रजन, फास्फोरस व पोटाष के अतिरिक्त हार्मोन की मात्रा भी होती है। जो कि पौधों के लिए लाभदायक है। वर्मीवाष मिट्टी के बडे घडे में गोबर जैव अवषेष एंव केचुएं की बनाया जाता है।

आवश्यक सामग्री :

- घडे 02 (01 बडा, 01 छोटा)
- बाल्टी 01
- केचुए
- तैयार बर्मी कम्पोस्ट

बर्मीवॉश बनाने की विधि :

- एक मिट्टी के घडे के तले में छोटा छेद कर उसमें पतला पाइप लगा दें।
- घडे के अंदर सबसे पहले बालू/रेत की पतली परत विछाये।
- घडे में 15–20 सेमी 25 दिन पुराने गोबर की परत विछाये।
- गोबर की परत के ऊपर 15 सेमी हल्के सूखे जैविक पदार्थ की परत विछा दें व इसके ऊपर पुनः गोबर की परत विछा दें।
- घडे के ऊपर तक भर जाने पर 1000 से 2000 केंचुए घडे में छोड दें।

- बडे घडे के ऊपर एक 2–3 लीटर क्षमता का छोटा छेदयुक्त वर्तन या घडा लटका दें जिसमें बूँद–बूँद पानी केचुए वाले घडे में गिरता रहे।
- उपरोक्त बडे घडे व पानी के वर्तन का किसी जाल या डोरी की सहायता से छायादार पेड की टहनी पर लटका देते है।
- बडे घडे के नीचे एक वर्तन रख दें जिसमें वर्मीवाष (तरल पदार्श्थ) रूप में एकत्रीत होगा।

बर्मीवाश का उपयोग :

- 1:10 की मात्रा में पानी मिलाकर फसलों की विभिन्न अवस्थाओं में 15 दिन के अंतराल में प्रयोग किया जा सकता है।
- वर्मीवाष तथा गोमूत्र मिश्रण दस गुना पानी में मिलाकर छिडकाव करने से यह प्रभावकारी कीटनाषक एंव तरल खाद का कार्य करता है।

वर्मीवाश के लाभ :

- कीटनाशक।
- बीमारी रोकने की क्षमता।
- पौध में लगने वाले कीट को मिलने वाले स्वाद में बदलाव।
- कीट को नपुंसक बना देता है।
- वर्मीवॉस में सूक्ष्म जीवाणु हयूमरस अम्ल एंव हार्मोन की सहायता से भूमि की पी. एच. मान सामान्य रहता है।
- पौधों की अच्छा विकास, प्रतिरोधक क्षमता विकास व उत्पादन वृद्वि होती है।

1. जैविक खेती में सूक्ष्म जीवों की भूमिका – हार्क के संसाधन व्यक्ति मोहित विष्ट के द्वारा जैविक खेती में शूक्ष्म जीवों की भूमिका के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया तथा शूक्ष्म जीव किस प्रकार उपयोगी होते हैं इसको भी समझाया गया।

- सूक्ष्म जीवों के द्वारा जमीन की उर्वरक क्षमता बढाना।
- सूक्ष्म जीवों के द्वारा जमीन में वृद्वि हारमोन के स्तर को उचित मात्रा में बनाये रखना।
- विभिन्न जैविक प्रक्रियाओं में सूक्ष्म जीवों की भागीदारी।
- मित्र और शत्रु सूक्ष्म जीव।
- जैविक निम्नीकरण तथा अपघटन में शूक्ष्मजीवों की भूमिका।

2. फसलों में लगने वाली बिमारियों का प्रबन्धन – हार्क के संसाधन बबीता जोशी के द्वारा फसलों में लगने वाली बिमारियों के बारे में बताया गया साथ ही बिमारियों का प्रबन्धन जैबिक तरीकों से कैसे किया जाये इसकी विस्तृत जानकारी दी गयी।

- शत्रु तथा मित्र कीट।
- कीटों की पहचान तथा उपका प्रबन्धन।
- जैविक तरीकों से विमारियों का प्रबन्धन।

दिनांक 24.03.2022 को राजकीय महाविद्यालय बडकोट में शिवंश खाद प्रदर्शन प्रशिक्षण दिया गया जिसमें हार्क के संसाधन व्यक्ति राकेश कुमार के द्वारा प्रस्तुतिकरण तथा प्रयोगात्मक प्रशिक्षण दिया गया जिसमें महाविद्यालय परिसर में सभी छात्र – छात्राओं की मदद से एक शिवंश खाद तकनीक युनिट लगायी गयी। शिवंश खाद जैविक खेती हेतु खाद बनाने की एक विशेष प्रकार की तकनीक है जिसमें कम समयावधि में एक अच्छी गुणवता वाली खाद तैयार की जा सकती है। शिवंश खाद को बनाने में मात्र 18 दिन का समय लगता है तथा मात्र 18 दिन में एक अच्छी गुणवता वाली खाद बनके तैयार हो जाती है जिसे उपयोग किया जा सकता है। शिवंश खाद बनाने की विधि निम्न प्रकार से है–

शिवंश खाद बनाने की विधि –

परिचय:

हमारे देश में ज्यादातर लोग कियान हैं और उनमें से कई अपने और अपने परिवार के पालन पोषण के लायक भी कमा नही पा रहे है। हमने ऐसे लोगों की सहायता करने का एक तरीका ढूंढ निकाला है। हम उन्हें एसी तकनीक सिखा सकते हैं जिससे वे बिना पैसे खर्च किए अपने खेतों के लिये खुद खाद बना सकतें है – मात्र 18 दिनों मे।

शिवंश खाद के फायदे –

- कम रासायनिक खादों व कीटनाशकों की जरुरत।
- शिवंश खाद के प्रयोग से खेतों में खर पतवार कम उगते है। अतः खर पतवार हटानें में समय की बचत।
- उपज में 15 से 40 प्रतिशत तक की बढत अतः आमदनी में बढत।

शिवंश खाद बनाने हेतु आवश्यक सामग्री –

- चारा काटने की मशीन अथवा काटने हेतु उचित औजार।
- पानी।
- कुदाल या फावडा।
- प्लास्टिक शीट।
- तस्ला लगभग 10 ली0 माप का।
- सूखी सामग्री(सूखी घास, सूखी पतियां इत्यादि)।
- हरी सामग्री(हरी घास, हरी पतियां इत्यादि)।
- ताजा गोबर (एक सप्ताह से पुराना ना हो)।
- जाल(लगभग 5 फीट उंचा तथा 1.5 मीटर चौडा)।

शिवंश खाद बनाने हेतु किसी भी छायादार स्थान का चयन करना आवश्यक है। शिवंश खाद बनाने हेतु तीनों सामग्रियों को एक विशेष प्रकार के अनुपात में मिलाया जाता है जिसमें सूखी सामग्री : हरी सामग्री : गोबर को 3 : 2 : 1 के अनुपात में मिलाया जाता है। सूखी सामग्री में 15 लीटर पानी तथा हरी सामग्री में 10 लीटर पानी तथा गोबर मे 5 लीटर पानी मिलाया जाता है। इस प्रकार से यह हमारी एक परत बनती है तथा इस प्रक्रिया को लगभग 6 से 8 बार दोहराना आवश्यक है। जिस दिन हम युनिट तैयार करते हैं वह हमारा शून्य दिवस माना जाता है। युनिट में 6 से 8 परतें दोहराने के पश्चात् इसे प्लास्टिक शीट से ढका जाता है। चौथे दिन खाद को पहली बार पलटा जाता है जिसमें सबसे पहले तापमान परीक्षण तथा नमी का परीक्षण किया जाना आवश्यक होता है। तापमान तथा नमी का सही पाये जाने के पश्चात् खाद को पलटा जाता है जिसमें बाहर की परत को अन्दर की तरफ तथा अन्दर वाली परत को बाहर की तरफ रखा जाता है। इसके पश्चात् इस प्रक्रिया को प्रत्येक दूसरे दिन

दोहराना है तथा 18 दिनों में कुल 07 पलटाई करनी है। खाद की अन्तिम पलटाई 16 वें दिन होगी तथा 18 वें दिन खाद को उपयोग किया जा सकता है।

दिनांक 25.03.2022 को हार्क कैम्पस नौगांव में भ्रमण किया गया जिसमें पहले हार्क के संसाधन व्यक्ति बबीता जोशी के द्वारा छात्र छात्राओं को मधुमक्खी पालन तथा प्रबन्धन के बारे में विस्तारपूर्वक प्रस्तुतिकरण दिया गया तथा हार्क के संसाधन व्यक्ति मोहित के द्वरा कैम्पस में लगे प्रदर्शनों के बारे में बताया गया जिसमें सोलर इन्सेक्ट ट्रेप, रुफ वाटर, मौसम मापी यंत्र, किसान जियो टैंक तथा हार्डनिंग चैम्बर आदि सम्मिलित थे।

दिनांक 26.03.2022 को छात्र –छात्राओं का नौगांत क्षेत्र के नेणी गांव में फील्ड भ्रमण करवाया गया जिसमें छात्र –छात्राओं को प्रगतीशील किसानों से बातचीत करने का अवसर मिला तथा छात्र –छात्राओं नें किसानों से नकदी फसलों तथा बागवानी, नर्सरी तथा फूलों की खेती के बारे में जानकारी प्राप्त की।

के अन्तर्गत यमुना घाटी में जैविक खेती 'अध्ययन एवं प्रशिक्षण'
केन्द्र स्थापना योजना का उद्घाटन समारोह
प्राचार्य
मुख्य अतिथि
विशिष्ट अतिथि

राजेन्द्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय बड़कोट, उत्तरकाशी
मुख्यमंत्री नवाचार योजना (उच्च शिक्षा विभाग)
के अन्तर्गत यमुना घाटी में जैविक खेती 'अध्ययन एवं प्रशिक्षण'
केन्द्र स्थापना योजना का उद्घाटन समारोह
मुख्य अतिथि : माननीय श्री आनन्द सिंह राणा, जिला पंचायत सदस्य, डख्याट गाँव वार्ड
विषय विशेषज्ञ : डॉ. प्रहलाद सिंह रावत, मानद फैलो दून लाइब्रेरी एंड रिसर्च सेंटर, देहरादून
राजेन्द्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय
बड़कोट, उत्तरकाशी
मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अन्तर्गत
मुख्य अतिथि
विशिष्ट अतिथि

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत महाविद्यालय में रोजगारपरक कार्यक्रम संचालन हेतु प्रस्ताव

द्वितीय चरण

वित्तीय वर्ष 2022–23

उच्च शिक्षा निदेशालय उत्तराखण्ड हल्द्वानी(नैनीताल) के द्वारा महाविद्यालय से मुख्यमंत्री नवाचार योजना हेतु प्रस्ताव मांगा गया था, जिसके क्रम में महाविद्यालय ने मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत महाविद्यालय में रोजगारपरक कार्यक्रम संचालन हेतु तीन विषयों क्रमशः जैविक खेती, मधुमक्खी पालन तथा होमस्टे योजना से जैविक खेती पर प्रस्ताव भेजे गए थे। जिसमें से उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा जैविक खेती को स्वीकृत किया गया था तथा उच्च शिक्षा निदेशालय उत्तराखण्ड के द्वारा जैविक खेती कार्यक्रम हेतू दो लाख की धनराशि आवंटित की गई। तत्पश्चात महाविद्यालय में मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत कमेटी गठित की गई और महाविद्यालय ने हिमालय एक्शन रिसर्च सेंटर (हार्क) से समझौता कर छात्र–छात्राओं हेतु प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था के लिए अधिकृत किया गया। महाविद्यालय ने जैविक खेती कार्यक्रम में 30 छात्रों का चयन किया। जिसके अंतर्गत विषय विशेषज्ञों द्वारा महाविद्यालय में प्रशिक्षण दिया गया। हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर के विषय विशेषज्ञों द्वारा दो दिन महाविद्यालय स्तर पर प्रशिक्षण दिया गया। जिसके अंतर्गत विभिन्न फसलों को उत्पादित करने हेतु विविध विधियों एवं खाद तैयार करना आदि का प्रशिक्षण दिया इसी के साथ दो दिन हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर के द्वारा अपनी प्रयोगशाला नौगांव में छात्र–छात्राओं को दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा छात्र छात्राओं को महाविद्यालय ने रामा सिराई क्षेत्र में लाल चावल की खेती की जानकारी हेतु भ्रमण कराया गया। महाविद्यालयजैविक खेती पर लगातार कार्य करता रहेगा, जिस कार्य हेतु वित्तीय वर्ष 2022–23 में महाविद्यालय में जैविक खेती को प्रोत्साहन देने व अपने कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु प्रस्ताव तैयार किया गया है।

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत प्रस्तावित गतिविधियां:

1–छात्र–छात्राओं को विषय संबंधी केंद्रों, संस्थानों एवं चयनित गांवों का भ्रमण कराना। बड़कोट से बाहर स्थित विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों का छात्रों को भ्रमण कराया जाएगा।

2–हिमालय एक्शन रिसर्च सेंटर द्वारा छात्र–छात्राओं को हैण्डसआन ट्रेनिंग दी जाएगी तथा उनके द्वारा छात्रों को विविध क्षेत्रों का भ्रमण कराया जाएगा।

3–जैविक खेती से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे पोस्टर वाद–विवाद आदि का संचालन कर छात्रों को पुरस्कृत किया जाएगा।

4–जैविक खेती से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें विषय विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान एवं कार्यशालाओं आयोजित की जाएगी। महाविद्यालय स्तर पर मृदा की जांच, वार्षिक वर्षा तथा

तापमान के आंकड़े एकत्रित किए जाएंगे।

5– प्रस्तावित कार्यक्रमों से जुड़ी परंपरागत कृषि शैलियों, पद्धतियों एवं तरीकों के स्थानीय ज्ञान को एकत्रित कर उनका अभिलेखीकरण एवं प्रकाशन किया जाएगा।

6–महाविद्यालय की परिधि में स्थित गांवों का चयन कर उनमें होने वाली कृषि से संबंधित आंकड़ों को एकत्रित किया जाएगा तथा यमुना घाटी के लोगों को जैविक खेती को बढ़ावा देने तथा रोजगारपरक बनाने के लिए हेतु प्रशिक्षण देने की योजना तैयार की जायेगी।

कार्यक्रम संचालन हेतु अनुमानित वित्तीय भार का विवरणः

क्र0सं0	मद	अनुमानित व्यय
1.	छात्र–छात्राओं एवं मार्गदर्शकों हेतु यात्रा व्यय एवं दैनिक भत्तापर व्यय।	20000.00
2.	स्टेशनरी, टाइपिंग खर्चा, पुरस्कार, अभिलेखीकरण का प्रकाशन, फोटोग्राफी आदि पर व्यय।	10000.00
3.	विषय विशेषज्ञों स्थानीय कृषको का यात्रा भत्ता दैनिक भत्ते आदि पर व्यय।	15000.00
4.	हैंड्स ऑन ट्रेंनिंग प्रशिक्षकों, विषय विशेषज्ञ का यात्रा भत्ता, मानदेय, प्रशिक्षण सामग्री पर व्यय।	20000.00
5.	महाविद्यालय परिसर में भूमि विकसित करना, खाद तैयार करना, बीज तथा पौध क्रय तथा रखरखाव आदि पर व्यय।	30000.00
6.	कृषि उपकरण एवं प्रयोगात्मक उपकरण क्रय।	5000.00
कुल योग		**100000.00**

लाभान्वित होने वाले छात्रों का विवरण

1– महाविद्यालय में बी० एस–सी के छात्र छात्राओं को वरीयता दी जाएगी।

2– संचालित कार्यक्रम से लगभग 15 से 20 छात्र–छात्राएं लाभान्वित होंगी।

3– प्रतिभागियों का चयन पहले आओ पहले पाओ के आधार पर किया जाएगा।

4– उपरोक्त मद एवं व्यय धनराशि में परिवर्तन किया जा सकता है।

भवदीय

प्राचार्य
राजेंद्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय

बड़कोट(उत्तरकाशी)

कार्यालयः–राजेंद्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय बड़कोट (उत्तरकाशी)

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अन्तर्गत विषय –जैविक खेती अध्ययन एवं प्रशिक्षण

मानदेयप्राप्ति रसीद

मैं प्रमाणित करता हूँ कि मैंने मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत जैविक खेती विषय पर आयोजित व्याख्यानमाला में उत्तरकाशी जनपद के रामा सिराई क्षेत्र में उत्पादित लाल चावल उत्पादन के विषय में दिनांक 23 मार्च 2022 को, योजना अंतर्गत सहभागी छात्र–छात्राओं हेतु व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा मैंने उक्त प्रयोजन हेतु मानदेय रू० 2000.00(दो हजार रूपए) तथा आवागमन का व्यय रू० 1000.00(एक हजार रूपए)कुल रू०**3000.00(तीन हजार रूपए)**प्राप्त कर लिए हैं।

दिनांक 23/03/2022 (डॉ प्रह्लाद सिंह रावत)
स्थान– बड़कोट विषय विशेषज्ञ

तालिका

यमुना घाटी में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें

क्र0 सं0	मुख्य रूप से उगाई जाने वाली फसलें	सूक्ष्म रूप में उगाई जाने वाली फसलें	अति सूक्ष्म रूप में उगाई जाने वाली फसलें।
1			
2			
3			
4			
5			

6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			
29			
30			

यमुनाघाटीकेगांव----------मेंफसलोंकावर्ष 2021

मेंउत्पादनप्रतिनालीकाविवरण

क्र0 सं0	परिवारकेमुखियाकानाम	फसलकानाम	फसलकीमात्रा (किलोग्राममें)
1			
2			
3			

4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			
29			
30			

कार्यालयः—राजेंद्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय बड़कोट (उत्तरकाशी)

Telephone 01375-224428 E-mail: principalgdcbkt@gmail.com

उपयोगिता प्रमाण पत्र

पत्रांक— / रा०म०ब० / मु0 न0 यो0 / जै0 खे0 / 2021—2022 दिनांक—26 / 03 / 2022

प्रमाणित किया जाता है कि वित्तीय वर्ष 2021—22 में उच्च शिक्षा निदेशालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड के पत्रांकः डिग्री बजट / आवंटन 5890 / 2021—22 दिनांक 14 जनवरी 2022 के द्वारा मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत इस महाविद्यालय को आवंटित धनराशि रू० 200000.00 (दो लाख रूपए मात्र) का शासनादेशानुसार उपभोग कर लिया गया है।

दिनांक—26 / 03 / 2022
स्थान— बड़कोट

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय बड़कोट
(उत्तरकाशी)

कार्यालयः प्राचार्य, राजेन्द्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय बडकोट(उत्तरकाशी)

Telephone01375.224428 Email:- principalgdcbkt@gmail.com

सेवा में,
संयुक्त निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, दून विश्वविद्यालय परिसर देहरादून

आदेश संख्याः / रा०म०ब० / मु० न० / प्रस्ताव / 2022—23 दिनांक 14 / 07 / 2022

विषयः— उच्च शिक्षा विभागान्तर्गत संचालित मुख्यमंत्री नवाचार योजना हेतु प्रस्ताव का प्रेषण।

महोदय,

आपके पत्र संख्याः 315 / मु० न० / 2022 23 दिनांक 12 / 07 / 2022 के अनुक्रम में इस महाविद्यालय में संचालित मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत विषय ''जैविक खेती'' पर वित्तीय वर्ष

2022–23 में बजट आवंटन करने हेतु प्रस्ताव तैयार कर आपकी सेवा में प्रेषित किया जा रहा है।

कृपया प्राप्ति स्वीकार कर महाविद्यालय में मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत, कार्यक्रम को संचालित करने हेतु बजट आवंटन करने की कृपा करें।

भवदीय

प्राचार्य
राजेंद्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय
बड़कोट(उत्तरकाशी)

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत विषय जैविक खेती पर अध्ययन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ

राजेंद्र सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय बड़कोट (उत्तरकाशी) में मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अंतर्गत जैविक खेती पर अध्ययन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री आनंद सिंह रावत, जिला पंचायत सदस्य डख्याटगांव एवं विशिष्ट अतिथि डॉ प्रह्लाद सिंह रावत की उपस्थिति में हुआ। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० डी० एस० मेहरा ने बताया कि मुख्यमंत्री नवाचार योजना के तहत महाविद्यालय को दो लाख रूपए प्राप्त हुए है, जिसके तहत महाविद्यालय के 30 छात्र–छात्राओं को जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु प्रशिक्षण दिया जाएगा। छात्र–छात्राओं को जैविक खेती के प्रति रुझान उत्पन्न किया जाएगा। प्राचार्य ने बताया कि जैविक खेती हेतु हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर देहरादून एवं उनकी शाखा नौगांव से समझौता किया गया है जिसके तहत छात्र छात्राओं को जैविक खेती के बारे में प्रशिक्षण देंगे। जिससे छात्र जैविक खेती को ज्यादा से ज्यादा इस क्षेत्र में प्रयोग करने हेतु कार्य करेंगे। योजना के समन्वयक डॉ० जगदीश चंद्र रस्तोगी ने छात्रों को अवगत कराते हुए जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु व्याख्यान प्रस्तुत किया उन्होंने कहा कि यमुना घाटी जैविक खेती हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है। जैविक खेती करने हेतु हमें अपने ग्रामीण को प्रेरित कर जैविक खेती के प्रति रुझान बढ़ाना होगा। उद्घाटन के अवसर पर मुख्य व्याख्याता डॉ प्रह्लाद सिंह रावत ने रामा सिराई शक्षेत्र में लाल चावल के उत्पादन के बारे में छात्र–छात्राओं को पूर्ण जानकारी से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि नब्बे के दशक से पहले यहां पूर्ण रुप से जैविक खेती की जाती थी लेकिन धीरे–धीरे रासायनिक खादों का उपयोग होने लगा है। जिससे तमाम प्रकार की बीमारियां उत्पन्न हो रही है। मुख्य अतिथि ने भी छात्र छात्राओं को संबोधित किया इस अवसर पर डॉ. युवराज शर्मा, डॉ. विजय बहुगुणा, डॉ० बी० एल० थपलियाल, डॉ० डी०पी० गैरोला, डॉ० दिनेश शाह, डॉ विनय शर्मा, डॉ अर्चना कुकरेती, राकेश रमोला, शार्दुल बिष्ट, श्रीमती पूनम, दीपेंद्र, सुनील एवं दीपक उपस्थित रहे।